14.
सूचना, संचार तथा प्रचार सेवाएं

कृषि ज्ञान प्रबंध निदेशालय (डीकेएमए) को भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद से संबंधित सूचनाओं, संचार और ज्ञान प्रबंधन के लिए नोडल केन्द्र के रूप में अधिदेशित किया गया है। इसके अतिरिक्त डीकेएमए द्वारा राष्ट्रीय कृषि अनुसंधान प्रणाली (नार्स) के ज्ञान स्रोत केन्द्र के तौर पर भी दायित्व निभाया जाता है, जिसमें भा.कृ.अनु.प. संस्थानों, कृ.वि.के., कृषि विश्वविद्यालयों, सीजीआईएआर संस्थाओं, अन्य वैज्ञानिक एवं शैक्षिक संस्थाओं तथा इस क्षेत्र से सम्बद्ध अन्य अंतर्राष्ट्रीय संगठनों से समन्वयन एवं संपर्क भी शामिल है। साथ ही भा.कृ.अनु.प. से संबंधित प्रसार गतिविधियों, प्रचार तथा छवि निर्माण से जुड़े कार्यकलाप भी डीकेएमए के कार्यकलापों में अहम् स्थान रखते हैं। सूचना एवं ज्ञान आधारित प्रिंट एवं इलैक्ट्रॉनिक फॉर्मेट में उत्पादों को तैयार करना; भा.कृ.अनु.प. एवं डेयर की वेबसाइट्स; सोशल मीडिया पर भा.कृ.अनु.प. के पेजों का रखरखाव एवं कंटेंट प्रबंधन; भा.कृ.अनु.प. की प्रौद्योगिकियों के प्रदर्शन के लिए इवेन्ट्स का आयोजन; सूचना के एकत्रण, भंडारण एवं प्रसारण हेतु पुस्तकालय सेवा: प्रचार एवं जनसंपर्क सेवाएं आदि अन्य ऐसे प्रमुख दायित्व हैं जिनका डीकेएमए द्वारा निर्वहन किया जाता है। एनएआईपी द्वारा वित्त पोषित दो उप-प्रायोजनाओं का बतौर कंसोर्टियम लीडर तथा अन्य दो प्रायोजनाओं का कंसोर्टियम पार्टनर के रूप में डीकेएमए द्वारा क्रियान्वयन किया जा रहा है।

भा.कृ.अनु.प. मुख्यालय (कैब-I, कैब-II तथा नास कॉम्प्लैक्स) और भा.कृ.अनु.प. संस्थानों के नेटवर्क एवं कनेक्टिविटी संरचना का समन्वयन भी डीकेएमए द्वारा कृषि ज्ञान प्रबंध इकाई (एकेएमयू) तथा राष्ट्रीय ज्ञान नेटवर्क के माध्यम से किया जा रहा है। कैब-I और कैब-II में 400 से अधिक इंटरनेट नोड्स के मेंटेनेंस का काम होता है।

नई पहल और उपलब्धियां

- भा.कृ.अनु.प. की ओपन एक्सेस पॉलिसी के विकास में डीकेएमए द्वारा केन्द्रीय भूमिका निभाते हुए परिषद की शोध पत्रिकाओं को प्रस्तुत किया गया तथा नोडल एजेंसी के तौर पर आवश्यक इनपुट प्रदान करते हुए समन्वयन भी किया गया।
- सोशल मीडिया पर भा.कृ.अनु.प. के वृहत ज्ञान स्रोतों/संसाधनों को फैकल्टी, स्टाफ, छात्रों और जन साधारण के मध्य साझा करने के उद्देश्य से परिषद द्वारा फेसबुक पेज का प्रारंभ मार्च, 2013 में किया गया। अत्यंत छोटे अंतराल में इस पेज पर 16,000 से अधिक 'लाइक' दर्ज किए गए और 600 से ज्यादा विजिटर्स ने इस पर उपलब्ध कंटेंट पर अपने कमेंट्स पोस्ट किए। आम जनता के लिए फोटो/ड्राइंग प्रतियोगिता और भा.कृ.अनु.प. कर्मियों के लिए स्लोगन/पंच लाइन प्रतियोगिता का आयोजन किया गया जिसमें बड़ी संख्या में लोगों ने भाग लिया। अपनी समस्त सामग्री/कंटेंट के लिए साइट को औसतन चार सितारा रेटिंग हासिल हुई।
- डेयर की नई वेबसाइट www.dare.gov.in का प्रारंभ किया गया। इस वेबसाइट के कंटेंट की नियमित रूप से अपलोडिंग और प्रबंधन का काम किया जा रहा है।

भा.कृ.अनु.प. का फेसबुक पेज

- भा.कृ.अनु.प. के 85वें स्थापना दिवस के अवसर पर भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय द्वारा स्थापना दिवस व्याख्यान से महत्वपूर्ण अवसरों/समारोहों की लाइव वेब कास्टिंग करने की एक नई पहल की गई। इसी क्रम में बेंगलुरू में आयोजित आठवें राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र सम्मेलन की संपूर्ण कार्यवाहियों को भी लाइव वेबकास्ट किया गया।
- डीकेएमए द्वारा डेयर और भा.कृ.अनु.प. को आईएसओ प्रमाणीकरण हासिल करने से संबंधित अधिकृत करवाने और वैधता की पुष्टि से संबंधित प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई गई। संगठन में गुणवत्ता प्रबंध प्रणाली के क्रियान्वयन के आधार पर ISO 9001 : 2008 मानकों के अनुसार प्रमाण पत्र प्रदान किया गया।
- 'ओपनिंग एक्सेस टू एग्रीकल्चरल रिसर्च जर्नलस् इन इंडिया' शीर्षक से भा.कृ.अनु.प. की पत्रिकाओं पर आधारित सफलता गाथा का प्रकाशन AR4D नामक GFAR और APAARI के प्रकाशन में प्रकाशित की गई।
- सर्वप्रथम पहल के तौर पर भारतीय पशुधन प्रजातियों (मात्स्यिकी एवं केज में रखे जाने वाले वन्य पशुओं सहित) के पोषण मानकों का समग्र रूप में दस्तावेज तैयार करते हुए 'न्यूट्रिएन्ट रिक्वायरमेंट्स ऑफ एनीमल' शीर्षक से 10 बुलेटिनों की एक शृंखला का प्रकाशन किया गया। भा.कृ.अनु.प. द्वारा पशु पोषण आवश्यकता पर गठित राष्ट्रीय समिति की संस्तुतियों पर ही यह शृंखलाबद्ध प्रकाशन आधारित है।
- भा.कृ.अनु.प. द्वारा विभिन्न कृषि विधाओं पर प्रकाशित हैण्डबुक की शृंखला में 'हैंडबुक ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग का प्रकाशन भी इस दौरान किया गया। इसमें देश के अग्रणी विशेषज्ञों का योगदान समाहित है।

वैश्विक संपर्क

अनुसंधानकर्ताओं, छात्रों, नीतिनिर्माताओं, कृषकों एवं समाज के

अन्य वर्गों के लोगों के लिए भा.कृ.अनु.प. की वेबसाइट (www.icar.org.in) हिन्दी एवं अंग्रेजी में ज्ञान एवं सूचनाओं के स्रोत के रूप में उपयोगी सिद्ध हो रही है। इस वेबसाइट को प्रतिदिन समाचारों, सफलता गाथाओं, घोषणाओं, परिपत्रों, निविदाओं तथा अन्य उपयुक्त सामग्रियों से अपडेट किया जाता है। वर्तमान में वैश्विक स्तर पर प्रतिमाह औसतन 2 लाख विजिटर्स की उपस्थिति दर्ज की जाती है जिनमें नए विजिटर्स की संख्या भी काफी होती है। इस रिपोर्ट की अवधि के दौरान 1200 नए पृष्ठों का सृजन किया गया और 1500 पृष्ठों को अद्यतन जानकारियों से अपडेट किया गया। कृषि कार्यकलापों से संबंधित विशिष्ट मौसम आधारित कृषि परामर्शदात्री सेवा तथा आकस्मिक योजनाओं को नियमित रूप से कृषकों एवं प्रसार कर्मियों के लाभ के लिए अपडेट किया गया। भा.कृ.नु.प. के संस्थानों और विषय विशेषज्ञों द्वारा विकसित महत्वपूर्ण परामर्शों को विभिन्न स्टेकहोल्डर्स के लिए वेबसाइट पर पोस्ट किया गया ताकि प्राकृतिक आपदाओं के बाद के दुष्प्रभावों की तीव्रता को कम किया जा सके। आईसीएआर यू-ट्यूब चैनल पर वीडियो फिल्मों, गणमान्य व्यक्तियों/प्रख्यात वैज्ञानिकों के व्याख्यानों, राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय आयोजनों की कार्यवाहियां आदि शामिल की गईं हैं। इस अवधि में इस चैनल पर उपलब्ध 100 वीडियो पर दो लाख से अधिक हिट दर्ज किए गए।

आईसीएआर की वेबसाइट पर परिषद का ई-पब्लिशिंग प्लेटफार्म (nttp://epubs.icar.org.in/ejournal) प्रस्तुत किया गया है। इसमें द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज, द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइंसेज, इंडियन फार्मिंग और इंडियन हॉर्टिकल्चर के अलावा आईसीएआर रिपोर्टर, आईसीएआर न्यूज, आईसीएआर मेल, आईसीएआर चिट्ठी (हिन्दी), इंडिया-आसियान न्यूज़ ऑन एग्रीकल्चर एंड फॉरेस्ट्री और एग्बायोटैक न्यूज डाइजेस्ट (विविध क्षेत्रीय भाषाओं में) शामिल हैं। ओपन एक्सेस मोड में इनकी ऑनलाइन उपलब्धता की वजह से विजिबिलिटी में बढ़ोतरी हुई है। इसके अलावा 'द इंडियन जर्नल ऑफ एग्रीकल्चरल साइंसेज के आईएसआई इम्पैक्ट फैक्टर में सुधार हुआ है और यह वर्ष 2009 के 0.088 की तुलना में वर्ष 2013 में बढ़कर 0.17 हो गया। इसी प्रकार द इंडियन जर्नल ऑफ एनीमल साइंसेज का आईएसआई इम्पैक्ट फैक्टर 2009 के 0.137 से बढ़कर 2013 में 0.147 हो गया। इन दोनों शोध पत्रिकाओं का एच सूचकांक क्रमश: 13 और 12 है। रिपोर्ट की अवधि में भारत, चीन, ईरान, टर्की, अमरीका, पाकिस्तान, मिस्र, मैक्सिको, ब्राजील और बांग्लादेश सहित 202 देशों के 1.44 लाख विजिटर्स ने इन जर्नल को वेब पर देखा तथा 9.63 लाख पृष्ठों का अवलोकन किया। शोध पत्रिकाओं के 19,000 पंजीकृत पाठक हैं और ई-पब्लिशिंग प्लेटफार्म पर शोध पत्रिकाओं के कुल रजिस्टर्ड उपयोगकर्ताओं की संख्या 50,000 से अधिक है। इसके अलावा इस प्लेटफार्म के माध्यम से ऐसी 15 अन्य शोध पत्रिकाओं को भी होस्ट किया जा रहा है, जो संबंधित प्रोफेशनल सोसायटिओं की हैं तथा जिन्हें डीकेएमए द्वारा शोध लेखों की ऑनलाइन प्रोसेसिंग एवं प्रकाशन का प्रशिक्षण दिया गया है। डीकेएमए द्वारा प्रकाशित दो अर्धवार्षिक एब्स्ट्रैक्टिंग जर्नल, यथा, इंडियन एग्रीकल्चरल साइंसेज एब्स्ट्रैक्ट्स और इंडियन एनीमल साइंस एब्स्ट्रैक्ट्स भी भा.कृ.अनु.प. की वेबसाइट पर ओपन एक्सेस मोड में उपलब्ध हैं।

ज्ञान एवं सूचना उत्पाद

डीकेएमए द्वारा 12 नियमित प्रकाशनों को जारी रखा गया, जिनमें शोध पत्रिकाएं, अर्ध तकनीकी (लोकप्रिय) पत्रिकाएं और इन हाउस

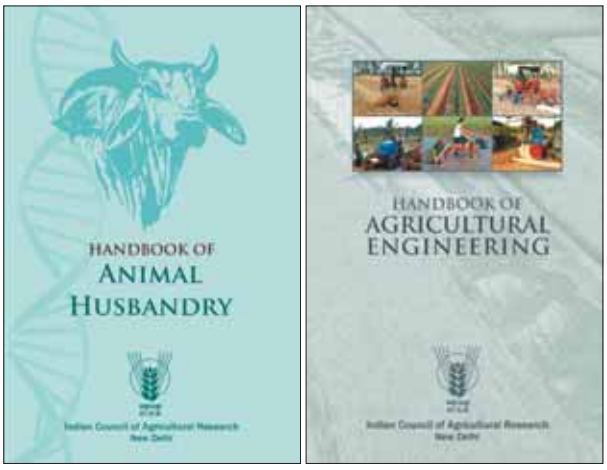

हैण्डबुक ऑफ एनीमल हसबैंड्री का संशोधित एवं विस्तारित संस्करण जारी किया गया तथा परिषद की हैण्डबुक सीरीज में हैण्डबुक ऑफ एग्रीकल्चरल इंजीनियरिंग को भी शामिल किया गया।

न्यूजलैटर्स (8 अंग्रेजी और 3 हिन्दी में; 1 हिन्दी, अंग्रेजी और 11 क्षेत्रीय भाषाओं में) शामिल हैं। रिपोर्ट की अवधि में इन सभी सूचना आधारित उत्पादों को नया आयाम देते हुए इन्हें अधिक सूचनाप्रद और विशिष्ट बनाने पर जोर दिया गया ताकि अनुसंधानकर्ताओ, छात्रों, कृषकों तथा अन्य संबंधितों जैसे लक्षित पाठकों की मांग के अनुरूप सामग्री को समाहित किया जाए। शोध पत्रिकाओं में नियमित तौर पर अग्रणी विशेषज्ञों के समीक्षा लेखों का प्रकाशन किया जा रहा है तथा सामयिक विषयों पर आधारित अर्ध तकनीकी पत्रिकाओं के विशेषांकों का प्रकाशन भी हो रहा है। तकनीकी पुस्तकों, मोनोग्राफ्स, टेक्स्टबुक्स, हैण्डबुक्स, तकनीकी बुलेटिनों, ब्रोशर्स आदि के हिन्दी और अंग्रेजी में 100 से अधिक प्रकाशन इस दौरान किए गए। डीकेएमए द्वारा भा.कृ.अनु.प. के विभिन्न संस्थानों को प्रिंटिंग एवं प्रकाशन से संबंधित विशेषज्ञ परामर्श और सहायता भी प्रदान की गई तथा इसी क्रम में 'अ जर्नी इन सर्च ऑफ टैलेंट-ग्लिम्प्सेज फॉर एएसआरबी' तथा शिक्षा प्रभाग के नए एवं संशोधित स्नातकोत्तर करिकुलम एवं सिलेबस का प्रकाशन हुआ। परिषद के कई प्रमुख वार्षिक इवेन्ट्स, यथा आम वार्षिक बैठक, भा.कृ.अनु.प. स्थापना दिवस, पुरस्कार वितरण समारोह आदि से संबंधित महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सामग्री तैयार करने से लेकर समन्वयन का कार्य भी डीकेएमए द्वारा दक्षतापूर्ण ढंग से किया गया है। वर्ष के दौरान डीकेएमए द्वारा भा.कृ.अनु.प. की प्रौद्योगिकियों को प्रदर्शित करने हेतु 14 राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रदर्शनियों/शोकेसिंग में भाग लिया गया। इसके अलावा निदेशालय द्वारा भा.कृ.अनु.प. के विभिन्न संस्थानों को क्षेत्रीय

राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय आयोजनों के दौरान भा.कृ.अनु.प. द्वारा विकसित तकनीकों का प्रदर्शन

भा.कृ.अनु.प. की ओपन एक्सेस पॉलिसी—मुख्य बिन्दु

- भा.कृ.अनु.प. के प्रत्येक संस्थान को एक ओपन एक्सेस इंस्टीट्यूशनल रिपोजिटरी की स्थापना करनी होगी।
- भा.कृ.अनु.प. या इसके संस्थानों में किए गए अनुसंधान के आधार पर संस्थान के वैज्ञानिकों/अनुसंधानकर्ताओं द्वारा लिखे गए लेखों को प्रकाशन के लिए स्वीकृत होने के तुरंत बाद लेखक की अंतिम पांडुलिपि (प्रकाशन पूर्व या प्रकाशन पश्चात) संस्थान के ओपन एक्सेस इंस्टीट्यनल रिपोजिटरी में जमा करवाना आवश्यक है।
- भा.कृ.अनु.प. या परिषद से जुड़े संस्थानों में सार्वजनिक फंड से किये गये अनुसंधान से प्राप्त विशिष्ट लेखों के लेखकों को भा.कृ.अनु.प. संस्थानों के ओपन एक्सेस इंस्टीट्यूशनल रिपोजिटरी में लेखक की अंतिम पांडुलिपि जमा करवाना आवश्यक है।
- भा.कृ.अनु.प. संस्थानों/अन्यत्र कार्यरत भा.कृ.अनु.प. के वैज्ञानिकों या अन्य अनुसंधान कर्मियों ऐसे प्रकाशकों से अपना अनुसंधान कार्य प्रकाशित करने को प्रोत्साहित किया जायेगा जो ओपन एक्सेस इंस्टीट्यूशनल रिपोजटरी में अपना कार्य दर्ज करायें।
- प्रकाशकों के साथ कॉपीराइट समझौते पर हस्ताक्षर करते समय वैज्ञानिकों को सलाह दी जाती है कि वे भा.कृ.अनु.प. ओपन एक्सेस के विषय में बतायें और यदि प्रकाशक का विशेषाधिकार है तो 12 महीने से अधिक न हो।
- एमएससी और पीएचडी की थीसिस (पूर्ण) और अनुसंधान प्रायोजनाओं का सारांश कार्य समाप्ति के पश्चात संस्थान की ओपन एक्सेस रिपोजटरी में जमा करवाया जाना चाहिए।
- प्रोफेशनल सोसायटियों को परिषद की वित्तीय सहायता से प्रकाशित पत्रिकाएं, संगोष्ठी कार्यवृत और अन्य विशेष लेख भी ओपन एक्सेस में उपलब्ध कराये जायेंगे।
- पेटेन्ट/व्यावसायीकरण सामग्री वाले दस्तावेज या जिसमें संस्थान/लेखक पर वैधानिक प्रतिबद्धता हो ऐसे दस्तावेज संस्थान की ओपन एक्सेस रिपोजटरी में शामिल नहीं किये जाने चाहिए।
- भा.कृ.अनु.प. में सृजित कृषि ज्ञान के एक जगह पहुंच के लिए भा.कृ.अनु.प. की सभी रिपोजिटरियों से सारे रिकार्ड का मेटाडेटा और पूरी पाठ्य सामग्री प्राप्ति के लिए एक केन्द्रीय हार्वेस्टर की स्थापना की जायेगी।
- संस्थागत रिपोजिटरियों के सभी मेटा-डेटा और अन्य सूचना पर भा.कृ.अनु.प. का कॉपीराइट होगा।
- संस्थान अपनी अप्रकाशित रिपोर्टों को अपने एक्सेस रिपोजिटरी में रखने के लिए स्वतंत्र हैं।

स्तर पर आयोजित एग्री-एक्स्पो में भागीदारी सुनिश्चित करने से संबंधित समन्वयन में अहम् भूमिका निभाई गई। लगभग 75.54 लाख का राजस्व प्रकाशनों और ई-प्रोडक्ट्स की बिक्री से जनवरी-दिसम्बर 2013 की अवधि में प्राप्त किया गया।

एफएओ के एग्रिस डेटाबेस के राष्ट्रीय इनपुट सेन्टर के तौर पर डीकेएमए द्वारा वेबएग्रिस सॉफ्टवेयर के लिए 1270 इनपुट तैयार कर उपलब्ध कराए गए ताकि उपयोगकर्ताओं के लिए ऑन लाइन सर्च में असुविधा न हो। भा.कृ.अनु.प. के संस्थानों और अन्य प्रोफेशनल सोसायटियों के प्रतिभागियों को एफएओ के एग्रिस डेटाबेस के लिए डेटा इंडैक्सिंग के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रमों का भी आयोजन किया गया। पुस्तकालय सेवा के अंतर्गत लगभग 2,000 प्रकाशनों की बार कोडिंग का काम किया गया। एनएआईपी की ई-ग्रंथ उपप्रायोजना के अंतर्गत शोध प्रायोजना रिपोर्ट और अन्य तदर्थ रिपोर्टों सहित लगभग 600 शीर्षकों/टाइटलों का डिजिटल रूपांतरण का कार्य पूरा किया गया।

डीकेएमए द्वारा एनएआईपी सब-प्रोजेक्ट 'मोबिलाइजिंग मास मीडिया सपोर्ट फॉर शेयरिंग एग्रो इंफोर्मेशन' के कंसोर्टियम लीडर (10 केन्द्र) के रूप में राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय मीडिया (हिन्दी, अंग्रेजी, पंजाबी, मलयालम, तमिल, कन्नड और गुजराती) में लगभग 500 समाचारों/फीचर लेखों का प्रकाशन हुआ जिनमें एनएआईपी और भा.कृ.अनु.प. द्वारा विकसित विभिन्न कृषि प्रौद्योगिकियों पर आधारित जानकारियां प्रदान की गईं। प्रायोजना के माध्यम से 40 टेलीविजन/रेडियो कार्यक्रमों का राष्ट्रीय एवं क्षेत्रीय स्तर पर प्रसारण संभव हो सका तथा रेडियो के विभिन्न चैनलों पर विभिन्न क्षेत्रीय भाषाओं में ऑडियो कैप्सूल भी श्रोताओं तक पहुंचाए गए। भा.कृ.अनु.प. की वेबसाइट पर अंग्रेजी और हिन्दी में लगभग 200 समाचारों और 25 सफलतागाथाओं को अपलोड किया गया। विभिन्न भा.कृ.अनु.प. संस्थानों की प्रयोगशालाओं और फार्म्स में 14 मीडिया मीट आयोजित की गई जिनका प्रिंट और इलैक्ट्रानिक मीडिया में कवरेज हुआ। परिषद द्वारा आयोजित निम्न प्रमुख इवेन्ट्स के लिए प्रचार एवं जनसंपर्क सेवाएं प्रदान की गईं: ग्यारहवीं कृषि विज्ञान कांग्रेस, भुबनेश्वर (8 फरवरी, 2013), भा.कृ.अनु.प. सोसायटी की 84वीं वार्षिक आम बैठक, नई दिल्ली (18 फरवरी, 2013); भारतीय कृषि विश्वविद्यालय और आसियान राष्ट्र बैठक, नई दिल्ली (19 फरवरी, 2013); भा.कृ.अनु.प. निदेशक सम्मेलन, नई दिल्ली (20 मार्च, 2013); भा.कृ.अनु.प. क्षेत्रीय कमिटी III की 21वीं बैठक, जोरहट (17 अप्रैल, 2013); तीसरी-आसियान-भारत कार्य समूह की बैठक, नई दिल्ली (6 मई, 2013); सीएमएफआरआई-सार्क अंतर्राष्ट्रीय कार्यशाला, कोच्चि (5 जून, 2013); 85वां भा.कृ.अनु.प. स्थापना दिवस, नई दिल्ली (16 जुलाई, 2013); एनएआईपी एग्री-टैक इंवेस्टर्स मीट, नई दिल्ली (19 जुलाई, 2013); इंडियन डेयरी सम्मिट 2013, नई दिल्ली (24 जुलाई, 2013); 'द 50 पैक्ट' कॉमेमोरेशन ऑफ डॉ. बोरलॉग फर्स्ट विजिट टू इंडिया, नई दिल्ली (17 अगस्त, 2013); बोरलॉग ग्लोबल रस्ट इनीशिएटिव टैक्नीकल वर्कशॉप, नई दिल्ली (22 अगस्त, 2013); नेशनल वर्कशॉप ऑन आउट स्केलिंग फार्म इनोवेशन, नई दिल्ली (3-5 सितम्बर, 2013); आठवां राष्ट्रीय कृषि विज्ञान केन्द्र सम्मेलन, बेंगलुरू (23 अक्तूबर, 2013); एग्रीइनोवेट का स्थापना दिवस (19 अक्तूबर, 2013); कृ.वै.च.मं. का स्थापना दिवस, नई दिल्ली (1 नवम्बर, 2013)।

वर्तमान में डीकेएमए द्वारा ओपन एक्सेस पॉलिसी, क्वालिटी पॉलिसी और ई-गर्वेनस मॉड्यूल्स को ध्यान में रखते हुए अपनी रणनीतियों में बदलाव किए जा रहे हैं। ज्ञान एवं सूचना के उत्पादों को सभी संबंधितों तक उपलब्ध कराने के समय अंतराल में नवोन्मेषी प्रबंधन पद्धतियों और आधुनिक आई टी के टूल्स को अपनाए जाने के कारण लगातार कमी होती जा रही है। अंतर्राष्ट्रीय संगठनों के मध्य संपर्क स्थापित किए जा रहे हैं ताकि भारतीय कृषि अनुसंधान को वैश्विक मंच पर दर्शाया जा सके। अपने संपूर्ण प्रयासों से डीकेएमए द्वारा भा.कृ.अनु.प. प्रणाली को संवेदी और उत्प्रेरक बनाया जा रहा है ताकि सभी संबंधितों तक कृषि अनुसंधानों से संबंधित जानकारियां नई सूचना एवं संचार प्रणाली के माध्यम से पहुंचना सुनिश्चित हो सके। ❑